Ayurved Darpan - Journal of Indian Medicine

A Peer Reviewed Journal

Review Article

RASASHASTRA KA VIKAS EVAM PARAD SANSKAR KI AVASHYAKATA.

Swati Patil[1], P. V. N. R. Prasad[2],
Associate Professor, Department of Rasashastra and Bhaishajya Kalpana,
1. Yashwant Ayurvedic College P.G.T. & R.C., Kodoli, Kolhapur,
2. Dr. NRS Government Ayurvedic College, Vijayawada, Andhra Pradesh.
*Corresponding Author: Swati Patil, email: swati.2908@gmail.com

Article Received on: 06/04/2017 Accepted on: 20/05/2017

ABSTRACT:

रसशास्त्र का मुलद्रव्य एवं स्त्रोत पारद है| अभ्रकादि धातु रस गंधकादी उपरस लोह रत्न विष उपविष विविध खनिज द्रव्य और पाषाण इन सबमे 'पारद' का महत्व और स्थान अनन्यसाधारण है| बाल्के सर्व क्रिया और प्रक्रिया का मूल ही पारद है| इस पारद को लक्ष करके अनेक रसक्रिया उपक्रिया प्रयोग जिस शास्त्र मे वर्णित है उस वृहदशास्त्र को रसशास्त्र कहा जा सकता है|

सर्व भारतीय ज्ञान का मूल वेद है| रसविद्या शास्त्र का प्रारंभ भी वेदिक काल से हुआ है| इसकी पुष्टि मे अर्थव वेद का उदाहरण मिलता है |साथ साथ चरक संहिता और सुश्रुत संहिता जैसे पुराणग्रंथ मे पारद का चिकित्सार्थ उल्लेख पाया जाता है| ये वास्तव है की मध्ययुगीन काल मे ८ वी शती से १३ वी शती तक रसशास्त्र प्रचुर मात्रा में और पुर्ण रूप विकसित दिखाई देता है|

KEY WORDS : रसशास्त्र, पारद संस्कार , रसेश्वर दर्शन .

INTRODUCTION:

सर्व प्रकारके शास्त्र मे अनेक विचारधारा एंव प्रणालियॉ होती है उसी प्रकार ये शास्त्र मे भी है उसमे मुख्यतः

१) वौदधसंप्रदाय
२) सिदधसंप्रदाय
३) नाथसंप्रदाय

प्रमुख माने जाते है| आज जो भी रसशास्त्र उज्वल स्थिती मे है उसका कारम ये संप्रदाय की धारणाएँ और उस धारणास्वरूप शास्त्रविकास का प्रयत्न सम्मिलित है रसशास्त्र उगम तो वेदो मे है| लेकिन इसका चरम विकास बुदध के समकाल हुआ जहॉ उपर लिखे दो संप्रदाय भी काफी उन्नत अवस्था मे थे| रसशास्त्र का प्रवक्ता और देवता भगवान शिव को माना जाता है | सिदध और नाथ संप्रदाय का उपव्देष्टा भी भगवान शिव ही है परस्पर भिन्न मतप्रणाली होते हुए भी दो संप्रदायो ने परस्परपुरक काम करके रसशास्त्र विकास मे अपना सहयोग दिया है|

रसशास्त्र मुख्यतः लोहवेद के लिए उत्पन्न और विकसित हुआ ऐसा माना जाता है इसकी अनेक कथाएँ भी वर्णित है लेकिन रसशास्त्र प्रमुख और आद्य ग्रंथ जैसे रसार्णव और रसहृदयतंत्र मे देखा जाए तो ये मान्यताएँ अर्धसत्य है ऐसे प्रतीत होता है रसार्णव ग्रंथ उमा महेश्वर के प्रश्नोत्तर स्वरूपा मे जहॉ पारद का मान किया गया है जहॉ स्वयं भगवान शिव ने ये कहा है |

कर्मयोगेन देविशि प्राप्यते पिण्डधारणम् |
रसश्च पवनश्चेति कर्मयोगी व्दिविधा मतः ||
मुर्च्छितो हरतो व्याधि मरतः जीवयति स्वयमू |
वध्दः खेचरता याति रसो वायुश्च भैरवि || रसार्णव १८ – १९

कर्मयोग के लिए मनुष्य पिण्डधारण करता है| रस (पारद) और पवन (वायु) ये दो कर्मयोग है पारद सिध्द करके (विविध संस्कार द्वारा) मुर्च्छित होके व्याधीनाश करता है मृतः होके जीवन प्रदान करता है और अगर पारद को वध्द किया जाय तो आकाश मे विचरण करने की शक्ती देता है | जिस प्रकार प्राणायामादि विधिद्वारा मृत होकर जीवन प्रदान करता है | समाधि आदि उपायो से प्राण को वध्द करके आकाशगमनादि सिद्धि प्राप्त की जाती है|

आगे जाकर ये कहा गया है कि इस पिण्ड की रक्षा यत्नवत करनी चाहिए क्योंकि अगर पिण्ड नष्ट हो गया तो धर्म कहॉ से रहेगा और धर्मनाश के कारण क्रियानाश होगा| क्रिया नष्ट होने से योगनष्ट होगा योगनाश के कारण गतिनाश गति से मोक्ष नष्ट हो जाएगा इसलिए पिण्डरक्षण प्रयत्नतः करना चाहिए क्योंकि जीवन नष्ट होने से अधम प्राणी को भी मुक्ती मिलती है लेकिन जीवनमुक्ती के बाद मिलनेवाले मोक्ष का उपयोग क्या? धर्म अर्थ काम और मोक्ष ये मानव जीवन के ४ उद्देश है इस में अन्तिम उद्देश मोक्षप्राप्ती है मोक्षप्राप्ती 'योग अभ्यास' के

© All Rights reserved. An Official Publication of Rasamrut Publications

द्वारा प्राप्त होती है इस योगभ्यास अविघ्नस्वरूप मे पूर्ण करने के लिए जरा व्याधी रहीत देह की आवश्यकता है अनंतकाल तक योगाभ्यास के द्वारा सच्चिदानंद का अनुभव करते मोक्षप्राप्ती के लिए स्थिर पिण्ड की अत्यंत आवश्यकता है| क्योंकी हठयोगपुदीपिका मे जरा श्वास कास आदि योगाभ्यास मे विघ्न स्वरूप कहे गए है |

जरारहित व्याधिरहीत शरीर को पिण्डस्थैर्य कहा गया ये देह स्थिर करने की शक्ति पारद में है पिण्डस्थैर्य के लिए पारद ही साधनद्रव्य है जैसे लोहवेद मे निकृष्ट धातुओ मे परिणत किया जाता है जिसे धातुवाद कहा जाता है |

प्रथम धातुवाद प्रारंभ हुआ जैसे हीन धातुओ को केवल अपने संपर्क से स्वर्ण रजत आदि कोटि धातु मे परिणत करनेवाला पारद शरीर को भी उत्तम कोटि का बनानेवाला समझा गया रसार्णव ग्रंथ आगे ये भी कहा है|

‘ यथा लोहे तथा देहे कर्तव्य ः सुतकः सदा |
समानं कुरूते देवि प्रत्ययं देहलोहयोः |
पूर्व लोहे परीक्षेत ततो देहे प्रयोजयेत् ||

अर्थात जिसप्रकार लोह के उपर ये कार्य करता उसी प्रकार देह के उपर भी समान कार्य करता है इसलिए पूर्व लोह धातु पर परीक्षा करके तदन्तर देहपर प्रयोजन करना इसे देहवाद कहा गया रसशास्त्र विकास केवल धातुवाद के लिए हुआ ये धारणा यहाँ गलत सिद्ध होती है|
क्योंकी शरीर को लोह की उपमा दी गई है इसप्रकार संस्काररसिद्ध पारद प्रथम लोह पर और बाद मे देहपर प्रयोज्य करने का आदेश है|

रसोपनिषत ने इसे आत्मावत कहा है जैसे की यथा रसस्तथा आत्मा यथा हि आत्मा तथा रस और रसशास्त्र का प्रयोजन भी इस तरहा से बनाया है|

धर्मार्थमुपभोगानां नष्टराज्यविवृध्दये |
आयुर्यौवनलाभार्थ मुक्त्यर्थच मुमुक्षुनाम | रसोपनिषत्

धर्म अर्थ विविध कामना उपभोगार्थ नष्टराज्यवृध्दीकर आयु यौवन प्राप्यर्थ और उसी के साथ जीवन का अंतिमलक्ष्य ‘मुक्ती प्राप्ती के लिए रसशास्त्र को प्रयोज्य किया है|

माधवाचार्य ने भी रसेश्वरदर्शन मे इस प्रयोजन को पुष्टि दी है

‘न च रसशास्त्रं धातुवादार्थमेवेति मन्तव्यं |
देहवेधद्वारा मुक्तिरेव परमप्रयोजनत्वात् | रसेश्वरदर्शन

इसप्रकार रसार्णव मे भी कहा गया है रसविद्या ये सर्व श्रेष्ठज्ञान है और त्रिलौक में दुर्लभ इससे ऐहलौकिक ऐश्वर्य और मुक्ति मिलती है |

इसप्रकार जीवनमुक्ती एकमात्र ‘पारद’ है साथ साथ में स्वर्ण रजत जैसे मूल्यवान धातुओं के निर्माण मे पारद अंत्यत उपयुक्त होने से संसार के ऐश्वर्य का साधन माना गया शरीर को स्थिर बनाना है तो किसी मूल (वनौषधी) स्वर्णादी धातु से बनाया रसायन समर्थ नही हो सकता क्यौंकी मूल और धातु प्रकृती से नाशवान अग्नी से जलनेवाला जल आदि द्रव से भिगनेवाला उष्णता से सुखनेवाला होता है जिसप्रकार योगी लोग अंतिमतः भगवान शिव के शरीर मे लीन होते है उसी प्रकार अभ्रकजारीत पारद मे स्वर्णादि धातु लीन हो जाते है, ऐसा पारद अमृतसमान गूणकारी है और शरीर को जरा रूजापह बनाने का सर्वश्रेष्ठ साधन है|

इसप्रकार मध्यमयुगकाल मे पारद को संस्कारित करके उसको प्रयोजन लोहवेध | लोहवाद | धातुवाद और तदन्तर देहवाद मे होने लगा | जिसका मूल आधार मोक्षप्राप्ती, उसके लिए देहस्थैर्य है और इस विचारधारा का मूल आधार नाथसंप्रदाय और सिद्धसंप्रदाय है | ये संप्रदाय ने विविध सिद्धी (और अष्टयोगऐश्वर्यप्राप्ती के लिए संस्कारीत पारद प्रयोजन किया|

कालक्रम के अनुसार विविध विदेशी आक्रमण के कारण अतिउन्नत अवस्था मे पहुँचा हुआ रसशास्त्र और उसके अनेक मुख्य ग्रंथ लुप्त हो गए साथसाथ मे सिद्धसंप्रदाय भी समाप्त हो गया अर्थात इसी कालक्रम मे धातुवाद विद्या और देहवेध देहवाद कायाकल्प भी लुप्त हो गया|

मुलत पारदविद्या के २ भाग थे

१) लोहवेध
२) रसायनसिद्धि – जरावस्था दुर करके मनुष्य को दीर्घायु अजरामर बनाने की सिद्धि

जिसमे आजकल रसशास्त्र पारद मात्र चिकित्सोपयोगी रह गया|

आजकल रसशास्त्र का उपयोग चिकित्सा के लिए हो रहा है रस रसायन के अनेक योग रामबाण की तरह उपयोग मे लाए जा रहे है स्वल्पमात्रा और सद्यः फलदायी स्वरूप प्रयोज्य होने से सर्व प्रकार के औषधो में ये अधिक प्रभावशाली सिद्ध हो रहे है|

पारद चिकित्सा में सर्वश्रेष्ठ है इस पुष्टि के लिए मध्ययुगीन जैसे की

रसवैधो भवेत श्रेष्ठो मध्यमो मुलिकादिभि |
अधमः शस्त्रदाहाभ्यां सिद्ध वैधस्तू मान्त्रिक |
आयुर्वेद प्रकाश

पारद का चिकित्साक्षेत्र मे सर्वश्रेष्ठत्व बताने के लिए दोनो प्रकार के व्याधीयो का नाश करने की अलौकीक शक्ती पारद मे है |

‘आजन्मपापकृतनिर्दहनैकवहनिर्दारिद्र्यदुःखगजवारणासिंहरूपः ||
रसरत्नाकर

इसी प्रकार पारदचिकित्सा में न दोष दुष्य रोग रोगी काल देश किसी भी ज्ञान अपेक्षा नही है ये प्रभाव से कार्यकारी है इतना ही नही असाध्य रोगो मे अतीव फलदायी माना गया है|

शुध्द एंव मृत पारद का प्रयोग करने से रोगी एंव चिकित्सक को तुलादान तथा अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है ऐसा शास्त्रवचन है|

१३ वी १४ वी शताब्दी तक पारद का क्षेत्र रोग निवृत्ति तक ही रह गया और रोगनिवृत्तितक पारद के जितने संस्कार उपयुक्त थे उनका ही प्रचार रह गया|

पारदसंस्कार का मूल – १ ‘दंतकथा’

मूलतः पारद पंचप्रकार कहा है|
रस,रसेंन्द्र,सुत,पारद मिश्रक

इन ५ प्रकार में रस और रसेन्द्रं अत्यंत शुध्दतम स्वरूप में सर्व दोषरहीत रसायन है| ये दो प्रकार देव और नागो के द्वारा सेवन करने

© All Rights reserved. An Official Publication of Rasamrut Publications

के बाद देव नाग अजरा और अमर हो गए| ये प्रभाव से मनुष्य को वंचित करने के लिए इस दो स्त्रोत को देव और नागोद्वारा मिट्टी और पत्थर से भर दिया गया| मनुष्य ने रस और रसेंद्र के अभाव मे सूत पारद और मिश्रक की खोजकर उसे जीवनोपयोगी बनाया यह देखके इन्द्रं ने भगवान शिव से प्राथ—ना करके पारद को दोष और आवरणयुक्त बनाया तब सेकर पारद का विना संस्कार कोई उपयोग नही होता | प्रस्तृत कथा का अंधविश्वास अतिंरजित भाग छोडकर अनुमान निकालने के प्रयास में सिध्द होता है की विना संस्कार पारद का उपयोग नही होता है कारण दोष उपस्थिती से सर्व ग्रंथकारो ने अनुसार मुख्यतः त्रयदोष प्रधान है|

विपंवहनिर्मलश्चेति दोषा मुख्यतयास्त्रयः |

पारद के विना शुद्धिप्रयोग से मुर्च्छा मरण दाह मे बाधाएँ होती है अतएव पारदशुद्धि और संस्कार करना परम आवश्यक है जैसे कि आयुर्वेदप्रकाश ने कहा है|

अतो दोषनिवृत्यर्थं रसः शोध्य प्रयत्नतः |
शोधितो रसराजस्तु सुधातुल्यफलप्रदः || (आ.प्र.)

पारद के अष्टमहादोष, योगिकदोष,औपाधिक दोष इस प्रकार नामाभिधान अंतर्गत माने गए है पारद शोधन का उद्देश ये दोषो से मुक्ति पाना है क्योंकि अगर तदतद दोषयुक्त पारदसेवन विशिष्ट व्याधिउत्पादक के रूप में वर्णित किया गया है|
शोधन के अंतर्गत पारदशुद्धि वर्णित है|

शोधन – सामान्य शोधन – रोग नाश हेतु

विशेष शोधन – रसायन गुण प्राप्ती

शोधन दोषहरण – धन्वन्तरि संहिता

सामान्य शोधन – १) पारद मे मिलावट दुर करना
२) द्रव्य के विषमखण्ड को सम करना
३) द्रव्य मारण योग्य बनाना
४) द्रव्य को सेन्द्रिंय गुणोयुक्त करना
आदि अपेक्षित है

इस शोधन निम्न अपेक्षित क्रिया है|

१) स्वेदन मर्दन मुर्च्छन पातन आवाप निर्वाप आदि.

विशेष शोधन – पारद में अष्टमहादोष बताए गए है इस महादोष को पृथक रूप से दूर करने के लिए संस्कार के अतिरिक्त जो विधी है पारद विशेष शोधन है|

संस्कार – संस्कार शोधन और विशेषशोधन से अतिरिक्त कुछ अधिक है|

"संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते |"

संस्कार मे गुणान्तर[3]Transformation´अपेक्षित है|

"संस्कार बलतेजोसोभिवर्धनम् |"

संस्कार से पारद का बल और तेज का वर्धन अपेक्षित है|

क्रियात्मक स्वरूप more qualitative होना अपेक्षित है|
बल का अर्थ कार्य सफल करने की शक्ति है ये शक्ति की वृदधि अपेक्षित है जेसे कहा है|

रसायनप्रयोगेष रसागमविशारदः |
रसराजं प्रयुज्जीत कर्माष्टकविशोधित्म् || (र.त.५/४३)

लोहसिद्धि के लिए पारद मे जो अष्टादशसंस्कार किए जाते है उसीमे प्रथम अष्टसंस्कार देहसिद्धि के कार्य में उपयुक्त है रसरत्नसमुच्चय कार वाग्भट ने भी इसकी पुष्टि की है|

इत्यष्टौ सूतसंस्काराः समा द्रव्ये रसायने |
शेषा द्रव्योपयोगित्वान्न ते वैधोपयोगिन || (र.र.स.)

रसपद्धतिका के अनुसार भी

पारद के अष्टसंस्कार का ज्ञान देहवाद के लिए महत्वपूर्ण है पारद के उपर संस्कार करके पारद जितना बल वीर्य युक्त बनाया जाता है |उतना अधिक प्रभावी ओर अचिंतय कार्य करता है देहवाद के लिए रस रसायन द्रव्यो का निर्माण कर चिकित्साक्षेत्र मे प्राणिमात्र दुःख दर्द निवारण करना है तो अष्टसंस्कारित पारद की नितांत आवश्यकता है| पारद अष्टसंस्कार देहवाद धातुवाद दोनो के लिए समानरूप से उपयोगी है परंतू पारद से विशेष औषधीय रसायन गुणप्राप्ती हेतु अष्टसंस्कार करके पारदीय योगों को उपयोग में लाया जा सकता है|

निघण्टू रत्नाकर मे पारदशुद्धी का महत्व करते हुए अशुध्द पारद साक्षात विषवत वर्णन लिया है|

दोषीनो यदा सूतस्तदा मृत्यु ज्वरापहः |
साक्षादमृतमप्येव दोषयुक्तो रसो विषम् |
तस्माद्दोषविशुध्दयर्थं रसशुध्दिविधीयते ||

पारदसंस्कारो की आवश्यकता प्रधान हेतु ही यह है की उसके विना सर्व त्र सिद्धि मिलना असंभव है अतः सिद्धी के लिए रस संस्कारो ज्ञान अनिवार्य रूप से नितांत आवश्यक है|
संस्कार संख्या

पारद संस्कार संख्या अष्टादश है कुछ विद्वान के अनुसार उनविशंति है कुछ विद्वान के अनुसार अष्ट है|
रसोपानिषत के अनुसार पारदसंस्कार संख्या १६ है जिसप्रकार जन्म से मृत्यू तक शरीरपर १६ संस्कार किए जाते है|

© All Rights reserved. An Official Publication of Rasamrut Publications

पारदसंस्कार

संस्कार	र.ह.त	रसार्णव	रसरत्नाकर	आ.क	र.प्र सु	र.र.स	र.चि	आ.प्र
१) स्वेदन	+	+	+	+	+	+	+	+
२) मर्दन	+	+	+	+	+	+	+	+
३) मुर्च्छन	+	+	+	+	+	+	+	+
४) उत्थापन	+	+	+	+	+	+	+	+
५) पातन	+	+	+	+	+	+	+	+
६) रोधन	+	+	निरोधन	+	+	+	+	+
७) नियमन	+	+	+	+	+	+	+	+
८) सन्दीपन	+	+	+	+	+	+	+	+
९) अनुवासन	+	+	+	+	+	+	+	+
१०) ग्रासमान	+	+	+	+	ग्रासमान	गगन भक्षन	+	+
११) चारणा	+	+	+	+	+	+	+	+
१२) गर्भदुति	+	द्रावण	+	+	+	+	+	+
१३) बाह्यदुती	+	दुतिमेलन	+	+	+	+	+	+
१४) जारणा	+	+	+	राग	+	+	+	+
१५) रंजन	+	+	+	+	+	+	+	+
१६) सारणा	+	+	+	+	+	+	+	+
१७) क्रामण	+	+	प्रतिसारण	अनुसारण	+	+	+	+
१८) वेध	+	+	लोहक्रामण	प्रतिसारण	+	+	+	+
१९) भक्षण	+	+	देहक्रामण	देहलोहवेध	+	+	+	+

पारद अष्टविध संस्कारः

१) स्वेदन
२) मर्दन
३) मुर्च्छन
४) उत्थापन
५) पातन
६) रोधन
७) नियमन
८) दिपन

पारद अष्टविध संस्कार वर्गीकरण

१) प्रथम पंचसंस्कार – दोषमुक्तीकारणार्थ
२) षष्ठ,सप्तम और अष्टम संस्कार – गुणान्तराधानार्थ

संस्कार	संस्कारार्थ द्रव्य	प्रक्रीया	काल	फलप्राप्ती	यंत्र उपयोगार्थ

© All Rights reserved. An Official Publication of Rasamrut Publications

१) स्वेदन	क्षार,अम्ल,द्रव्य शुष्ठी,चित्रक राजिका, पिप्पली आर्द्रक, सैन्धव भुलिका मरिच	स्वेदन	त्रिदिन	मलशौथिल्य	दोलायंत्र
२) मर्दन	कांजी,गृहधूम इष्टिकाचूर्ण सैन्धव चुर्ण राजिका चूर्ण दग्धउण	मर्दन	त्रिदिन	बहिमर्ल विनाशन	तप्तखरल
३) मुर्च्छन	घृतकुमारी स्वरस त्रिफला क्वाथ चित्रक क्वाथ कांजी	मर्दन	त्रिदिन	नष्टपिष्टत्व कारंक पारदस्य स्वरूपविनाराम् चापल्यनाश नागवर्ण पारद	तप्तखरल
४) उत्थापन	कांजी उष्ण जल उष्ण जल निंम्बुस्वरस	स्वेदन प्रक्षालन मर्दन आतप पातन		नष्टपिष्ट पारद का पुनः उत्थापन मुर्च्छाव्यापत्ति नाशनम	दोलायंत्र तप्तखरल डमरू यंत्र
५) पातन	ताम्रचुर्ण निम्बु स्वरस	उर्ध्वपातन अधः पातन तिर्यकपातन		नाग वंग दोषनाशक रसायनयोग्य	विद्याधर डमरू यंत्र तिर्यकपातन यंत्र
६) बोधन मुखकरण	सृष्टीअम्बुज (मुत्र,शुक्र, सैधंव)		त्रिदिन	षण्ढता नाश मन्दता विर्यवान महामुखकर	कुंभ
७)नियमन	लशुन सैंधव भृंगराज कर्कोटी चिंचिका कांजी	स्वेदन	त्रिदिन	चपलत्व निवृत्ती निर्मलस्तेजवान वहानिमित्रत्वकारक वीर्यवान	दोलायंत्र
८) दीपन	स्फटिक कासीस टंकण, मरिच सैंधव शिगु सर्षप कांजी	स्वेदन	त्रिदिन	बुभुक्षाकारक ग्रासार्थी वीर्यतेजवृद्धि	दोलायंत्र

अष्टसंस्कार के बाद शुध्द पारद परीक्षा

© All Rights reserved. An Official Publication of Rasamrut Publications

अष्टसंस्कार समाप्ती के बाद पारद का भारनाश अपेक्षीत है शुध्दी प्रक्रीया मे सात भाग पारद नष्ट हो जाए ओर केवल एक भाग पारद शेष रहे तब उसे शुध्द समझना चाहिए |

अष्टसंस्कार के बाद पारद मे सुर्य प्रकाश की तरह आभा बढती है पारद अत्यंत चमकीला वर्णवान हो जाता है|

संदर्भ

१) अर्थववेद अर्थवकाण्ड ७ अ ७९
२) रसार्णव
३) रसार्णव
४) रसहृदयतंत्र
५) रससंहीता

REFERENCES:

ग्रंथनाम	ग्रंथकार	प्रकाशन	वर्ष
रसार्णव	इंद्रदेव त्रिपाठी	चौखंबा प्रकाशन	२००१
रसहृदय तंत्र	गोविंद भागवत पाद	चौखंबा प्रकाशन	२००१
अभिनव रसशास्त्र	सिध्दीनंदन मिश्रा	चौखंबा प्रकाशन	२०१४
रसेंद्रसार संग्रह	कृष्णगोपाल	चौखंबा कृष्णदास ॲकॅडमी	२००१
रसरत्नसमुच्चय	सिध्दीनंदन मिश्रा	चौखंबा ओरियंटीलिया	२०११
रसतरंगिणी	सदानंद शर्मा	मोतिलाल बनारसीदास प्र.वाराणसी	२०००
आयुर्वेद प्रकाश	गुलराज मिश्रा	चौखंबा भारती ॲकॅडमी वाराणसी	१९९९

Cite this article as:

Swati Patil, P. V. N. R. Prasad, Rasashastra ka vikas evam parad sanskar ki avashyakata, Ayurved Darpan - Journal of Indian Medicine, April - June 2017, Vol. 2 Issue 2, p. 91-96.

© All Rights reserved. An Official Publication of Rasamrut Publications